पटना – 23
22.10.95.

श्री श्रीश जी,

शुभमस्तु।

दिनांक 20.10.95 को आचार्य योगेन्द्र जी ने आचार्यों की बैठक बुलायी थी आचार्य सरयू जी (मोतिहारी) के निवास पर जहाँ वे अपने पुत्र के मकान पर रह रहे हैं वर्तमान में। आचार्यों के नहीं आने के कारण और जो आचार्य नहीं थे उन लोगों की उपस्थिति के कारण साधारण बातें हुई, आचार्योपयोगी नहीं। बैठक में आप भी उपस्थित थे। आपने आचार्य योगेन्द्र जी समर्थित एक प्रश्न किया कि श्री श्री आनन्दमूर्त्ति जी का महाप्रयाण दिवस क्यों मनाया जाता है? यह तो वार्षिक श्राद्ध हुआ। मैं ने समझाया कि श्राद्ध तो लोग गरुड़ पुराण के अनुसार करते हैं मृतक की प्रेतात्मा से विमुक्ति हेतु और पुरोहित को दान दक्षिणा देते हैं। हम लोग यह सब नहीं करते हैं।

बाबा ने पार्थिव शरीर 21.10.90 को त्याग दिया था। उनका पवित्र पार्थिव देह सम्पूर्ण विश्व के मार्गियों के दर्शनार्थ रक्खा गया। सम्पूर्ण विश्व से मार्गियों के आकर दर्शन कर लेने के पश्चात् 26.10.90 को दाह संस्कार सम्पन्न हुआ था। 21.10.90 से 26.10.90 तक सभी उपस्थित मार्गियों ने प्रभात संगीत और कीर्तन में समय बिताया। बाद में उस अवसर पर आगत सभी मार्गियों की इच्छानुसार बाबा को श्रद्धाञ्जली अर्पण किया गया। प्रत्येक वर्ष इस अवधि में हम लोग प्रभात संगीत गाते हैं, + ~~इस अवसर पर हम लोग~~

कीर्त्तन करते हैं और अन्त में श्रद्धाञ्जली अर्पण करते हैं। इस अवसर पर हम जो कहते हैं उस का सारांश है – बाबा तुम अमूर्तरूप तारक ब्रह्म में विराजमान हो। हमलोगों को सभी कर्तव्यों और दायित्वों को पूरा करते हुए आगे बढ़ने की शक्ति दो और अन्त में अपनी शरण में ले लेना। ततपश्चात अपनी प्रतिज्ञा दुहराते हैं।

आपने पुनः प्रश्न किया कि बाबा आए कहाँ से और गये कहाँ? मैं ने समझाने का प्रयास किया कि स्वनिर्मित उपादानों द्वारा परमपुरुष एक मानव शरीर की संरचना करते हैं और उसी आधार के माध्यम से जगत में सब जन हिताय और सब जन सुखाय कार्य करते हैं। इस हेतु वे समय समय पर आते हैं। महासम्भूति श्रीकृष्ण ने कहा है, " सम्भवामि युगेयुगे"। मैं ने यह भी कहा कि इसी प्रकार इस युग में एक महासम्भूति का, तारक ब्रह्म का, आगमन हुआ श्री श्री आनन्दमूर्त्ति के नाम और रूप में। अपना काम पूरा कर पार्थिव शरीर त्याग कर बाबा चले गए। किन्तु, जानुस्पर्श और वराभय मुद्राओं द्वारा उन्होंने एक स्पन्दन शक्ति सृष्ट कर दिया है। इस का सहारा ले कर स्वयं को तथा जगत को सर्वात्मक कल्याण के पथ पर आगे बढ़ा कर ले चलने का आदेश बाबा ने दिया है (देखिए चर्याचर्य द्वितीय खण्ड)। किन्तु आपने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। आप क्रमशः उत्तेजित होते गये, उग्र हो गए और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। आपने चिल्लाते हुए कहा कि बाबा ने कहा था कि मैं यह शरीर नहीं हूं। यह शरीर तो उन्होंने छोड़ दिया। इसी प्रकार उन्होंने बंडुत कुर्त्ता, धोती, जूता सब छोड़ दिया है तो क्या सब के लिए

जी आँज रहे। जो भी हो, गुरू का घोर अपमान आपने किया है आचार्य योगेन्द्र जी का समर्थन पा कर। मैं गुरू का अपमान सहन नहीं कर सकता हूँ। इसलिये मैं ने आप के प्रति "नीरव व्यवस्था" का निर्णय लिया है। यह तब तक रहेगा जब तक आप की मानसिकता में सुधार न आ जाय। आपकी मानसिक विकृति में सुधार आते ही मेरी "नीरव व्यवस्था" समाप्त हो जायेगी। सूचनार्थ यह पत्र प्रेषित कर रहा हूँ।

अन्ततः मैं आप को एक छोटा भाई समझ कर आप के मंगल की कामना करता हूँ।

बाबा कृपा हि केवलम्।

आप का शुभाकांक्षी,
आचार्य चन्द्रनाथ।